JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

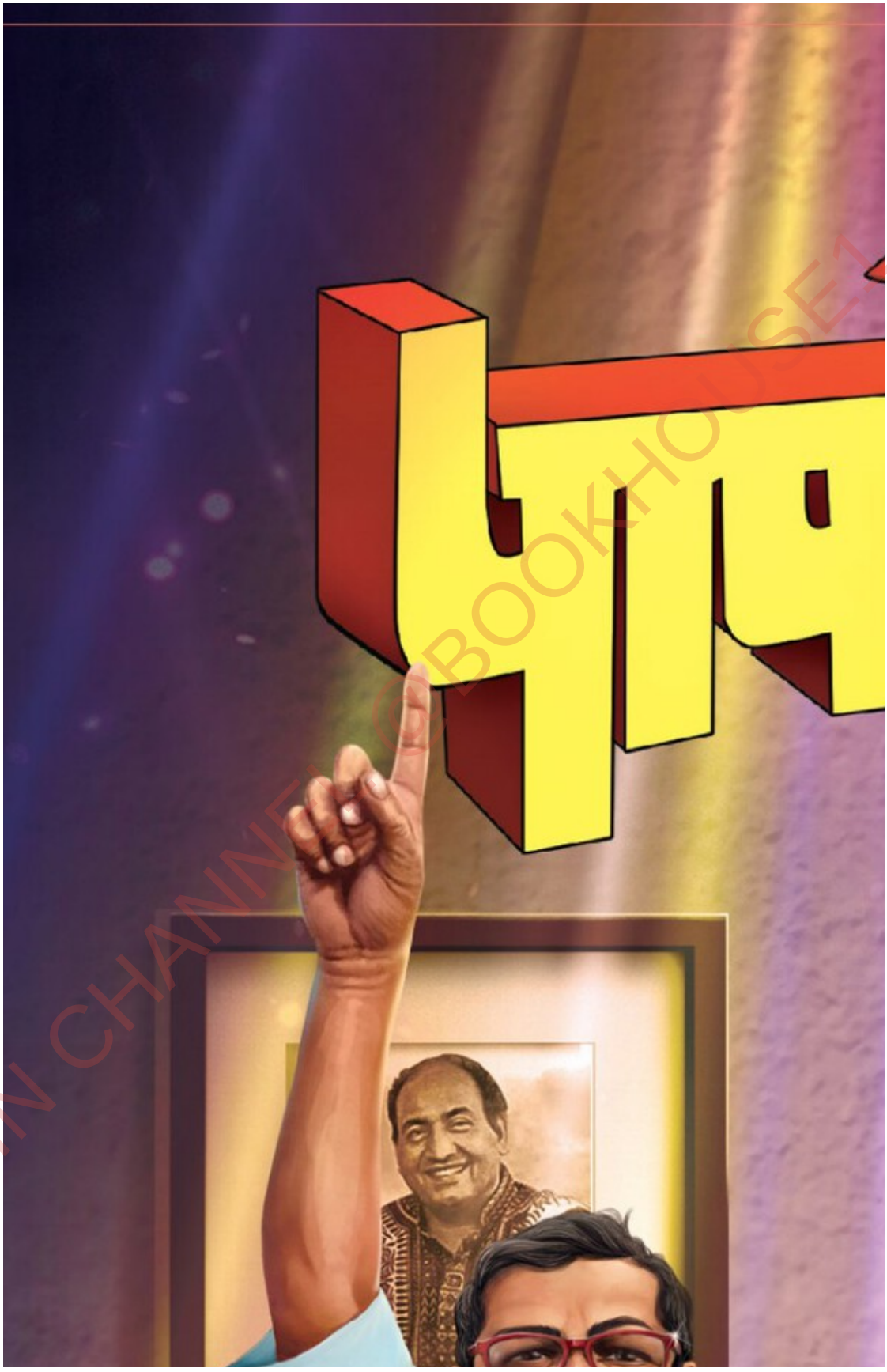

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

निखिल सचान

निखिल सचान हिंदी के एकमात्र IIT-IIM से पढ़े लेखक हैं और वह हिंदी के सबसे पॉपुलर लेखक भी हैं जिसके कारण उन्हें हिंदी का चेतन भगत भी कह दिया जाता है। लेकिन वह ख़ुद को निखिल सचान कहलाना ही पसंद करते हैं। वह फ़िलहाल मुंबई के एक बैंक में वाइस प्रेसिडेंट हैं। उनकी किताब 'पापामैन' पर रिलीज़ के पहले से ही फ़िल्म बनने का काम शुरू हो चुका है जिसे अनिरुद्ध रॉय चौधरी (नैशनल अवॉर्ड विनिंग डायरेक्टर – 'पिंक') डायरेक्ट कर रहे हैं। उनके उपन्यास 'यूपी 65' पर भी वेब सीरीज़ निर्माणाधीन है। कहानी-संग्रह—'नमक स्वादानुसार' और 'ज़िंदगी आइसपाइस' पर कई शार्टफ़िल्म्स बनी हैं और उनकी कहानियों का देश भर में मंचन होता रहता है। इनकी किताबों पर जर्मनी (मैक्सम्यूलर यूनिवर्सिटी) तथा अमेरिका (यूनीवर्सिटी ऑफ़ ह्यूस्टन, टेक्सस) में थीसिस छपी है और उन्हें देश-विदेश में मान-सम्मान भी मिला है।

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

पापामैन

निखिल सचान

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

ISBN : 978-93-87464-99-5

प्रकाशकः

हिंद युग्म

सी-31, सेक्टर-20, नोएडा (उ.प्र.)-201301

फोन- 0120-4374046

मुद्रक ः थॉमसन प्रेस, दिल्ली

आवरण ः ईशान त्रिवेदी

© निखिल सचान

Papaman

A novel by *Nikhil Sachan*

Published By
Hind Yugm
C-31, Sector-20, Noida (UP)-201301
Phone- 0120-4374046
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

प्यारी बेटी सितारा के लिए,

जिसने मुझे एक साधारण से आदमी से

एक असाधारण-सा ‘पापामैन’ बना दिया।

(सितारा - इस किताब के पहले संस्करण की सारी रॉयल्टी महिंद्रा ‘नन्ही कली’ प्रोग्राम के तहत, तुम्हारे जैसी और भी तमाम नन्ही लड़कियों की पढ़ाई के लिए डोनेट की जाएगी।)

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

आपकी नज़्र

शुभांगी के लिए, जिसके हिस्से का बहुत सारा वक़्त क़िस्से-कहानियों के लिए मेरे पागलपन की भेंट चढ़ गया, फिर भी उसने मुझसे इस सिलसिले में कभी झगड़ा नहीं किया। उल्टा मेरे जुनून को अपने प्यार और भरोसे से पाला और पोसा।

मेरे पापामैन के लिए, जिनका मन किसी बरगद के पेड़ जितना विशाल है और स्वभाव किसी झील के पानी जितना मीठा।

हम सबके अपने-अपने पापामैन के लिए, जो मन से एक कोमल-सी माँ होते हैं, लेकिन वो माँ होने वाली बात पिता होने की ज़िम्मेदारी के चलते हमसे छिपा जाते हैं।

आकाश और जॉय के लिए, जो इस कहानी पर बन रही फ़िल्म के प्रोड्यूसर हैं, जिन्होंने नवंबर 2018 में एक शाम बड़े भाई की तरह मेरी उँगली न पकड़ी होती, तो शायद मैं कभी बंबई जैसे अजीब शहर में फ़िल्म लिखने की हिमाक़त न कर पाता।

अनिरुद्ध रॉय चौधरी (टोनी) के लिए, जो इस कहानी पर बन रही फ़िल्म के डायरेक्टर हैं, जिन्होंने नेशनल अवॉर्ड विनिंग- 'पिंक' जैसी ख़ूबसूरत फ़िल्म बनाने के बाद मेरी कहानी में भरोसा दिखाया और सालभर मेरे साथ इस कहानी को तराशा।

मेरे परिवार के लिए, जो इस अजीब दुनिया में मेरे सुकून भरे घोसले हैं, जिनके पास मैं दिनभर की भागदौड़ के बाद हर शाम लौट आना चाहता हूँ।

इस देश के सबसे बड़े फ़नकार, मुहम्मद रफ़ी और किशोर कुमार के लिए, जो न होते तो शायद मोहब्बत करने वालों की हिम्मत कम हो जाती, उनके दुखों की सीलन और उनकी ख़ुशियों की ऊष्मा फीकी रह जाती।

उन सभी आर्टिस्ट्स के लिए जो अघोरियों की तरह अपना सब कुछ छोड़कर, एक दिन अपने जुनून को पालने-पोसने बंबई चले आते हैं।

बंबई के लिए, जो कुछ आर्टिस्ट्स को चमकता सितारा बना देता है, और बाक़ियों को पागल।

मुझे पढ़ने वालों के लिए, आप न होते तो शायद अब तक मेरे जुनून ने मुझे पागल बना दिया होता।

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

ऐ मेरे हमनशीं

मुझे मालूम है कि तुमने कई सपने देखे हैं। कुछ बचपन में, कुछ जवानी में और शायद कुछ बुढ़ापे में। सपने, जिन्हें तुमने दुनिया वालों की नज़र से छुपाकर रखा है।

वो कहते हैं न- "दुनिया का सबसे पुराना रोग कि क्या कहेंगे लोग?" मैं जानता हूँ कि इसी रोग से अपने सपने को बचाने के लिए तुमने उसे अपने डर के संदूक़ में छुपाकर रख दिया था।

मैं चाहता हूँ कि यह किताब पढ़ने के बाद तुम उसी संदूक़ से अपने एक पुराने सपने को तो निकालो यार। उसे झाड़ो-पोंछो, उसे दुलारो। उसे बच्चे की तरह पुचकार के कहो कि हाँ, मैं तुझे एक दिन ज़रूर पूरा करके रहूँगा।

देखो यार, सपने पूरा करने की कोई उम्र नहीं होती। लेकिन सपने न पूरा कर पाने के मलाल में एक उम्र भी कम है।

तुम्हें मालूम है, एक ब्रिटिश सरदार, फौजा सिंह जी ने 93 साल की उम्र में मैराथन दौड़ना शुरू किया। सौ साल की उम्र में वह मैराथन दौड़ने वाले पहले इंसान बने। धीरे-धीरे ही सही लेकिन वह दौड़ते तो हैं।

अगर कोई उनसे पूछे कि आप तो किसी से आगे भी नहीं निकल पाते, फ़र्स्ट भी नहीं आते, तो फिर इस बुढ़ापे में दौड़ने का क्या फ़ायदा? तो जानते हो, वह क्या कहेंगे? वह कहेंगे कि बस जी मैं किसी और से नहीं, अपनी उम्र से आगे-आगे दौड़ता हूँ, यही मेरा सुख है।

कितनी कमाल बात है न!

एक और महिला हैं, हरभजन कौर। उन्होंने 94 साल की उम्र में बेसन की बर्फ़ी बनाने का काम शुरू किया क्योंकि उनको ज़िंदगीभर बस यह मलाल था कि उन्होंने अपने दम पर एक पैसा भी नहीं कमाया। कोई भी कहेगा कि वह दस-पाँच रुपये कमाकर क्या ही कर लेंगी? लेकिन बात यह नहीं है। शायद उन्हें यह समझ में आ गया था कि आदमी की जब अर्थी उठे तो उस पर बस उसका शरीर जाना चाहिए, पछतावा और मलाल नहीं।

पछतावे का वज़न इंसान के शरीर के वज़न से सौ गुना भारी होता है, जो चार लोगों के कंधे पर अर्थी में भी नहीं उठता।

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

मैं चाहता हूँ कि हम मलाल का जीवन न जिएँ। हम इस दुनिया से जाएँ तो मुस्कुराते हुए जाएँ। इसकी ख़ूबसूरती में अपने सपनों की फुलकारी जोड़कर जाएँ।

सपने पूरा करने का अर्थ यह भी नहीं है कि हम उन्हें पूरा करके एक दिन फ़िल्मी सितारों की तरह पॉपुलर हो जाएँ या अमीर हो जाएँ। सपने देखने का अर्थ बस उसे जीने, उसके साथ समय बिताने का सुख होता है। वो सुख जो अँधेरी रात में जुगनुओं की रौशनी में भी उतना ही मिलता है, जितना सूरज की चमक में।

मेरे यार, यह किताब तुम्हें उन्हीं छोटे-छोटे चमकीले जुगनुओं के पीछे भागने की हिम्मत दे।

इसी उम्मीद में,

तुम्हारा निखिल

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

कहाँ क्या है

आपकी नज़्र
ऐ मेरे हमनशीं
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

आपके सपनों की ख़ातिर

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1

1

शाम के चार बजे थे। मई के महीने में कानपुर में सूरज ऊँघ रहा था और गर्मी से पसीना चुआ रहा था। पारा 48 के पार था। गर्मी इतनी थी कि कानपुर में सूरज भी डरता था कि कहीं उसे लू न लग जाए। बस यही कसर थी कि सूरज भी मुँह पर अँगोछा बाँध लेता और काला रेबैन चढ़ा लेता। चंद्रप्रकाश गुप्ता कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन में टिकट विंडो पर बैठे टिकट बना रहे थे। तीस साल से रेलवे में क्लर्क की नौकरी करते थे, लोगों को उनके गंतव्य तक पहुँचाते थे।

रोज़ की तरह आज भी टिकट बनाते हुए मोहम्मद रफ़ी का गाना गुनगुना रहे थे। 52 साल की उम्र में भी उनके गले में ग़ज़ब की मिठास थी। सफ़ेद शक्कर वाली बनावटी मिठास नहीं, ताज़े शहद वाली मिठास, जो ज़बान पर चिपक जाए तो घंटों लार में भी मिठास बनी रहे। आज भी जब वह रफ़ी साहब का गाना गाते थे तो एहतियातन उनका एक हाथ कान पर चला ही जाता था। जैसे एक शागिर्द जब गुरु का नाम लेता है तो इज़्ज़त देते हुए एक हाथ कान पर रख लेता है।

वह जी.पी. सिंह का इंतज़ार कर रहे थे जो उनके बाज़ू में टिकट विंडो पर बैठता था। दो दिन बाद चंद्रप्रकाश की बड़ी बेटी मिट्ठू की शादी थी। जी.पी. सिंह आता तो टिकट विंडो उसके हवाले करके चंद्रप्रकाश घर चले जाते। जी.पी. सिंह अक्सर सिगरेट-चाय के बहाने घंटाभर के लिए ग़ायब हो जाता और चंद्रप्रकाश को उसके हिस्से की टिकटें भी बनानी पड़तीं।

"अरे कितना देर कर दिए जी.पी. सिंह जी। मिट्ठू की शादी है। आज जल्दी घर जाना था। सँभाल लीजिएगा प्लीज़।" चंद्रप्रकाश फटाफट खड़े हो गए और उन्होंने बैग हाथ में उठा लिया।

"अरे गुप्ता जी! कानपुर में जल्दीबाजी में कुच्छो नहीं होता।" जी.पी. सिंह ने कहा।

"क्यों?"

चंद्रप्रकाश ने 'क्यों' बोलकर ग़लती कर दी थी क्योंकि जी.पी. सिंह कानपुर का ज़िक्र आ जाने पर इसके इतिहास के बारे में घंटों जुगाली कर सकता था। बोलता था तो फिर रुकता ही नहीं था। कुर्सी पर पैर बाँधकर, चौकड़ी मारकर बैठ गया और कहने लगा, "आपको मालूम है, एक बार ब्रह्मा

JOIN CHANNEL @BOOKHOUSE1